

School of Economics

Sub. - Indian Economy

Class - M.A. (~~With~~) sem. CBCS.

Teacher - Dr. Dharmendra Singh

Unit - 2

Topic - नारी अधिकारों का स्वतंत्रता

## आर्थिक व मानव या सामाजिक आधारिक संरचना में अन्तर (DISTINCTION BETWEEN ECONOMIC AND HUMAN OR SOCIAL INFRASTRUCTURE)

आर्थिक व मानव या सामाजिक संरचना में मुख्य अन्तर को निम्नलिखित सारणी में दर्शाया है—

### सारणी 1

आर्थिक आधारिक संरचना	मानव या सामाजिक आधारिक संरचना
1. इस संरचना के अन्तर्गत ऊर्जा, परिवहन, संचार आदि को सम्प्लिट किया जाता है।	इसके अन्तर्गत शिक्षा, स्वास्थ्य व अन्तर्गत सुविधाएँ आती हैं।
2. आर्थिक आधारिक संरचना आर्थिक विकास की प्रक्रिया (उत्पादन एवं वितरण) में वृद्धि लाती है।	यह संरचना मानव-विकास या मानवीय प्रक्रिया में वृद्धि लाती है।
3. यह संरचना अर्थव्यवस्था के उत्पादन व वितरण में प्रत्यक्ष रूप से सहायक है।	यह ढाँचा या संरचना अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करता है।

### आधारिक संरचना का आर्थिक विकास में महत्व

#### (IMPORTANCE OF INFRASTRUCTURE IN ECONOMIC DEVELOPMENT)

संक्षेप में, आर्थिक संरचना का आर्थिक विकास में महत्व इस प्रकार है—

1. औद्योगिक विकास—जिस देश में आर्थिक संरचना, जैसे—ऊर्जा, परिवहन, संचार व साख सुविधायें जितनी अधिक होंगी, उस देश का कृषि एवं औद्योगिक विकास उतना ही अधिक होगा।
2. GDP में वृद्धि—आर्थिक संरचना पर व्यय में वृद्धि से GDP की वृद्धि दर बढ़ती अनुमान है कि यदि संरचना पर 1% अधिक व्यय किया जाए तो GDP में 1% की वृद्धि हो जाएगी।
3. उत्पादकता में वृद्धि—आर्थिक संरचना द्वारा उपलब्ध सेवाओं के उपयोग से उत्पादकता में उल्लेखनीय सुधार होता है।

4. प्रौद्योगिकी का विकास—आर्थिक संरचना ही सभी क्षेत्रों में आधुनिक प्रौद्योगिकी का रस्ते खोलती है।

5. गरीबी उन्मूलन एवं विश्वव्यापीकरण—आर्थिक संरचना मात्र आर्थिक विकास में ही महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाती बल्कि गरीबी उन्मूलन, विश्वव्यापीकरण एवं निर्माण जौगांव सुधारों के लिए भी आर्थिक संरचना सहायक सिद्ध होती है।

### आर्थिक आधारिक संरचना के संघटक

#### (COMPONENTS OF ECONOMIC INFRASTRUCTURE)

आर्थिक आधारिक संरचना के निम्नलिखित चार महत्वपूर्ण संघटक हैं—

- (I) सिंचाई (Irrigation)
- (II) शक्ति या ऊर्जा (Power or Energy)—(i) कोयला, (ii) विद्युत, (iii) प्राकृतिक गैस, (iv) परमाणु ऊर्जा।
- (III) परिवहन (Transport)—(i) रेल परिवहन, (ii) सड़क परिवहन, (iii) जल परिवहन, (iv) वायु परिवहन।
- (IV) संचार (Communication)—(i) डाक सेवा, (ii) दूर संचार, (iii) उपग्रह।

#### I. सिंचाई (IRRIGATION)

**अर्थ—**जब कृषि कार्यों के लिए वर्षा पर्याप्त नहीं होती, तब कृत्रिम रूप से अर्थात् ताला नहरों, दूधबाल आदि साधनों से पानी का उपयोग खेती के लिए किया जाता है तो उसे सिंचाई कहते हैं। फ़ील्ड के शब्दों में, ‘‘कृषि के उद्देश्य से जहाँ आवश्यक हो कृत्रिम रूप से पानी को प्रिवेट रूप से दिया जाए।’’

**विशेषताएँ—** उपर्युक्त परिभाषा में सिंचाई में निम्न तीन विशेषताओं का आभास होता है—  
 (1) पानी की कृत्रिमता—कृषि कार्यों के लिए पानी का उपयोग कृत्रिम रूप से किया जाता है।  
 (2) कृत्रिम पानी खेत में दिया जाना—पानी कृत्रिम रूप से खेतों में ही दिया जाना चाहिए।  
 उसका उपयोग तालाब या अन्यत्र इकट्ठा करने के लिए होना चाहिए।  
 (3) कृत्रिम पानी देने का उद्देश्य कृषि करना—कृत्रिम पानी देने का उद्देश्य कृषि करना ही होना चाहिए।

## सिंचाई का महत्व या आवश्यकता (NEED OR SIGNIFICANCE OF IRRIGATION)

भारत सदा से कृषि-प्रधान देश रहा है। कृषि की पैदावार अन्य चीजों के साथ-साथ पर्याप्त बहुत पर निर्भर करती है। भारतीय कृषि को 'मानसून का जुआ' कहा गया है। वर्षा पर निर्भर रहने के कारण ही हमारी कृषि में अस्थिरता रही है। सिंचाई के साधनों का विकास करके कृषि में स्थिरता उत्पन्न की जा सकती है।

**भारत में सिंचाई का महत्व—** अन्य देशों की अपेक्षा भारत जैसे देश के लिए सिंचाई का विशेष महत्व है। इसके निम्नलिखित कारण हैं—

(1) वर्षा की अनिश्चितता तथा अनियमितता—भारत में वर्षा किसी वर्ष होती है तो किसी वर्ष नहीं और यदि होती भी है तो समय से पहले अथवा समय से बहुत बाद में, ऐसी स्थिति में कृषि पूर्णतया 'मानसून का जुआ' बन जाती है। अतः भारतीय कृषि की स्थिरता के लिए सिंचाई ही सुविधाओं का होना आवश्यक है।

(2) वर्षा के वितरण में असमानता—भारत के सभी भागों में एक समान वर्षा नहीं होती। एक ओर तो वेरापूँजी में वर्षा का वार्षिक औसत 428" है तो दूसरी ओर उत्तरमें यह मात्र 4" है। अतः अपर्याप्त वर्षा वाले क्षेत्रों में सिंचाई के उपर्युक्त साधनों का जुटाना आवश्यक है।

(3) खाद्यान्न तथा कच्चे माल की आवश्यकता—देश की बढ़ती हुई जनसंख्या को आवश्यक खाद्यान्न की प्राप्ति तथा उद्योगों के लिए कच्चे माल को जुटाने के लिए पर्याप्त सिंचाई के साधनों का होना आवश्यक है। सिंचाई के साधन बढ़ाकर वर्ष में तीन फसलें उगाई जा सकती हैं।

(4) वर्षा की मौसमी प्रकृति—भारत में वर्षा अधिकतर वर्षा ऋतु में ही होती है जिसकी अवधि जू से अक्टूबर तक होती है। वर्ष के शेष महीनों में वर्षा बहुत कम होती है। अतः शीतकालीन फसलों के लिए व बहु-फसल कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सिंचाई की बहुत आवश्यकता होती है।

(5) मिट्टी में विभिन्नता—देश में अधिकांशतः यही बलुई है जो कि नमी को अधिक समय तक बर्यम नहीं रख सकती। अतः इस कारण से कृत्रिम रूपों द्वारा सिंचाई करना आवश्यक हो जाता है।

(6) विशिष्ट फसलें—भारत जैसे कृषि-प्रधान देश में कुछ ऐसी भी फसलें होती हैं जिनके लिए लालातर और अधिक मात्रा में सिंचाई की आवश्यकता चाही है। ऐसी फसलों को जल की अधिक आवश्यकता होती है।

(7) रोजगार के अवसरों में वृद्धि—सिंचाई का महत्व इसलिए भी है कि इससे कृषि में रोजगार के अवसर उत्पन्न होंगे। पहले तो सिंचाई के साधनों का निर्माण तथा उनको संचालित करने में कई व्यक्तियों को रोजगार मिलता है; दूसरा, सिंचाई के साधनों की उपलब्धि से साल में

### सिंचाई का महत्व या आवश्यकता

1. वर्षा की अनिश्चितता तथा अनियमितता,
2. वर्षा के वितरण में असमानता,
3. खाद्यान्न तथा कच्चे माल की आवश्यकता,
4. वर्षों की मौसमी प्रकृति,
5. मिट्टी में विभिन्नता,
6. विशिष्ट फसलें,
7. रोजगार के अवसरों में वृद्धि,
8. उपज की किस्म में सुधार,
9. नयी भूमि पर खेती सम्भव,
10. हरित क्रान्ति की सफलता का आधार,
11. अकाल के भय से छुटकारा,
12. सरकार की आय में वृद्धि।

दो या दो से अधिक फसलें पैदा करना सम्भव हो जाता है, उससे किसानों को अधिक पैक काम अथवा रोजगार प्राप्त होगा और पाई जाने वाली अदृश्य बेरोजगारी दूर होगी। भी सुधार होता है जिससे किसानों की आय बढ़ने के साथ साथ लिंग होता है।

(9) नयी भूमि पर खेती सम्भव—भारत में कुछ कृषि योग्य भूमि बेकार पड़ी है। साधनों का विस्तार करके अतिरिक्त जमीन खेतों के अन्तर्गत लाई जा सकती है। सिंचाई के बिना खेती के लिए कभी प्रयुक्त नहीं किया जा सकता है। राजस्थान में गणना के बन जाने से नयी भूमि पर पहली बार कृषि प्रारम्भ की जायेगी। इस प्रकार सिंचाई से खेती भी सम्भव बन जाती है।

(10) हरित क्रान्ति की सफलता का आधार—भारतीय कृषि इस समय हरित क्रान्ति से गुजर रही है। उसमें गहन कृषि, बहु-फसली कार्यक्रम, उत्पादकता वृद्धि इत्यादि कार्यक्रम जा रहे हैं और इन कार्यक्रमों की सफलता के लिए सिंचाई के साधनों का शीघ्र विकास सदृप्योग अत्यन्त आवश्यक है।

(11) अकाल के भय से छुटकारा—सिंचाई के अभाव में अकाल पड़ने का भय है। जब से भारत में सिंचाई के साधनों का विकास हुआ है, तब से अकालों की वारमाला भीषणता घट गयी है।

(12) सरकार की आय में वृद्धि—सिंचाई के लिए प्रयोग किये गये कृत्रिम साधनों से कृषि और कृषक की ही उन्नति नहीं होती वरन् देश की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था इससे प्रभावित होती है। उत्पादन में वृद्धि होने से जनसंख्या के जीवन-स्तर में वृद्धि के साथ ही व्यापार में उन्नति होती है। इसके साथ ही व्यक्ति और सरकार दोनों की आय में वृद्धि होती है फलस्वरूप देश की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ एवं उन्नतिशील होती है।

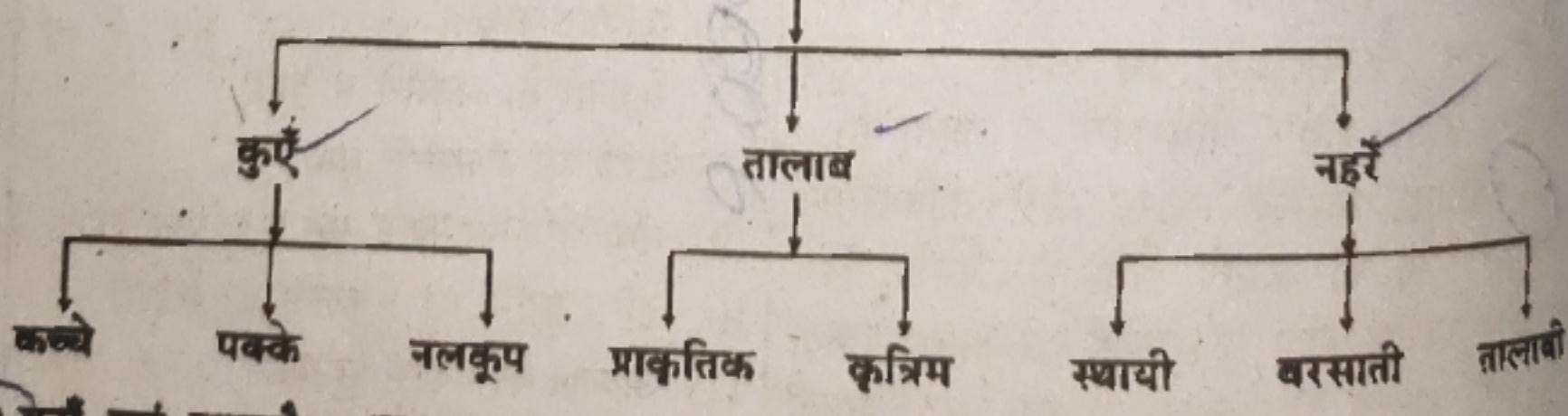
अतः सिंचाई के साधनों का भारत में बड़ा महत्व है और अन्य देशों की अपेक्षा साधनों के विकास की बहुत आवश्यकता है। सर चाल्स ट्रिविलियन ने ठीक ही कहा है, "मेरे सिंचाई का सर्वोपरि महत्व है। पानी सोने से भी अधिक मूल्यवान है।"

### भारत में सिंचाई के साधन

#### (SOURCES OF IRRIGATION IN INDIA)

अध्ययन की दृष्टि से सिंचाई के साधनों का हम तीन शीर्षकों के अन्तर्गत अध्ययन कर सकते हैं जैसा कि नीचे चार्ट में दर्शाया गया है—

#### सिंचाई के साधन



#### (1) कुएँ एवं दबूबवैल (Well and Tubewell)

परिचय—कुओं भारत में सिंचाई का अत्यन्त प्राचीन साधन है। कुएँ कच्चे, पक्के या नलकूपों के रूप में होते हैं। कुओं से सिंचाई के लिए मानवीय शक्ति, पशु-शक्ति व बिजली का प्रयोग किया जाता है। कुओं से देश के सभी भागों में सिंचाई करना सम्भव नहीं है। इनसे केवल सीमित क्षेत्र में ही सिंचाई हो सकती है।

क्षेत्र कुओं से सिंचाई की दृष्टि से उत्तर प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, पंजाब, हरियाणा व महाराष्ट्र के मुख्य हैं। नलकूपों का प्रयोग उत्तर प्रदेश, पंजाब व हरियाणा में अधिक होता है। तर्फ 2003-04 में देश में कुल सिंचित क्षेत्र में लगभग 28% सिंचाई कुओं द्वारा की जाती थी। ग्रामीण क्षेत्रों में विद्युतीकरण के कार्यक्रम पूरे होने से अब नलकूपों द्वारा सिंचाई की समस्या और अधिक ध्यान दिया जा रहा है। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कृषि में लवणीकरण ने नलकूपों की माँग में भारी वृद्धि की है।

**भारत**—(i) कम व्यय होने के कारण कुओं किसान के लिए सिंचाई का सबसे सरल व मुगम है।

(ii) खेतों में पानी भर जाने व लवणीकरण की समस्या उत्पन्न नहीं होती।

(iii) कृषक फसलों के चुनाव के लिए स्वतन्त्र होता है।

(iv) कुओं द्वारा सिंचाई से भूमि की उर्वरा शक्ति में वृद्धि होती है।

(v) कुओं के लिए किसी विशेष तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता नहीं पड़ती।

**दोष**—(i) कुओं द्वारा सिंचाई का क्षेत्र सीमित होता है।

(ii) कुओं में खारा जल निकल आने पर सिंचाई के लिए अनुपयोगी होता है।

(iii) जिन क्षेत्रों में भूमिगत जल नीचे रहता है, वहाँ कुओं द्वारा सिंचाई में बहुत असुविधा होती है।

### तालाब (Tank)

**परिचय**—वे भू-भाग जहाँ वर्षा का जल इकट्ठा हो जाता है, तालाब कहलाते हैं। यदि भू-भाग जली बड़ा हो तो यह झील के नाम से जाना जाता है। तालाब या झीलें प्राकृतिक व कृत्रिम दोनों प्रकारे हो सकते हैं। दक्षिणी भारत में तालाब सिंचाई के मुख्य साधन हैं क्योंकि यहाँ की पथरीली जल की बनावट तालाब बनाने के लिए ज्यादा उपयुक्त पाई गई है।

भारत में कुल सिंचित क्षेत्र के लगभग 4% भाग की सिंचाई तालाबों से की जाती है।

**लाभ**—(i) तालाबों से वर्षा के पानी का उचित उपयोग सम्भव हो जाता है।

(ii) तालाबों में मछलियाँ भी पाली जाती हैं जिससे कुछ सीमा तक खाद्य समस्या हल की सकती है।

(iii) तालाबों से वर्ष भर सिंचाई सम्भव है।

(iv) प्राकृतिक बनावट के कारण एक बड़े भू-भाग को तालाब का रूप दिया जा सकता है।

लाभ के कारण दक्षिण भारत में तालाबों का अत्यधिक प्रसार हुआ है।

**दोष**—(i) यदि वर्षा यथोचित मात्रा में न हो तो तालाबों में पानी बहुत कम मात्रा में आता है जिससे सिंचाई की सुविधाओं का अभाव रहता है।

(ii) तालाबों से खेत तक जल पहुँचाने में काफी श्रम व समय खर्च होता है।

(iii) तालाबों का अनेक कार्यों में उपयोग करने से बीमारियों के फैलने का भय बना रहता है।

### नहरें (Canal)

**परिचय**—सिंचाई का तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण साधन नहर है। विशुद्ध सिंचित क्षेत्र के लगभग 40% भाग की नहरों से सिंचाई की जाती है। भारत में नहरों की कुल लम्बाई विश्व में सबसे अधिक है। नहरों की सिंचाई स्तरी, सुविधाजनक और सुनिश्चित होने से आजकल बहुत व्यापक हो गई है। नहरें मुख्यतः तीन प्रकार की होती हैं—(i) स्थायी नहरें, (ii) बरसाती नहरें, (iii) तालाबी नहरें।

**क्षेत्र**—नहरों द्वारा सिंचाई मुख्य रूप से मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, हरियाणा, केरल, तमिलनाडु, असम, केरल तथा जम्मू एवं कश्मीर मुख्य हैं, लेकिन त्रिपुरा, गोप्ता तथा असम, नागार्जुना नदी, ब्रह्मगंगा एवं गंगा सिंचाई की जाती है।